23.6.65 प्रातः मुरली

ओम शान्ति

प्रातः मुरली

माता और पिता। — ॐ शान्ति। बच्चों ने अपनी माँ की महिमा सुनी। बच्चे तो बहुत हैं। समझा जाता है बराबर बाप है तो माँ भी जरूर है। रचता है तो फिर रचना के लिये माता भी जरूर होती ही है। भारत में माता की बड़ी अच्छी महिमा गाई जाती है। बड़ा मेला लगता है जगतम्बा का। कोई न कोई प्रकार से जगतम्बा की पूजा होती है। बाप की भी होती होगी। वह जगतम्बा है तो वह जगत पिता भी है। जगतम्बा साकार में है तो जगत पिता भी साकार में है। इन दोनों को रचता नहीं कहेंगे। वह तो साकार है ना। निराकार को ही कहा जाता है गाड फादर। गॉड फादर कहो, राजा तो समझता गुप्त है। छोटी माँ भी है, बड़ी भी है। महिमा छोटी माँ की है। भला अडाप्ट करते हैं। माँ को भी अडाप्ट किया तो वह बड़ी हो गई। वास्तव में महिमा साकार छोटी माँ की है। यह भी बच्चे जानते हैं हर एक को अपने कर्म भोग का हिसाब किताब चुक्तू करना है क्योंकि विकर्मीजीत थे फिर रावण ने विकर्मीबनाए दिया है। विकर्म सम्वत् भी है, विकर्मजीत सम्वत् भी है। पहला वर्ष सतयुग का कहेंगे विकर्मी-जीत फिर विक्रमी सम्वत् शुरू होता है। अभी तुम बच्चे विकर्मी पर जीत पाये विकर्मीजीत बनते हो। पाप जो हैं उनका योग बल से प्रायश्चित करते हैं। प्रायश्चित होता ही है याद से। जो बाप समझाते हैं बाप कहते हैं बच्चे याद करो तो पापों का प्रायश्चित हो जायेगा अर्थात् कट जावेंगे। सिर पर पापों का बोझा तो बहुत है जन्म जन्मान्तर का। समझाया गया है जो नम्बर वन में पुण्यात्मा बनता है वह ही नम्बर वन पापात्मा भी होता होगा। उन को बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। क्यों कि विघ्नविनाशक बनाते हैं सिरवलाने लिये तो जरूर मेहनत करते हैं। जो कुछ बीमारी आदि होती है अपने ही कर्म कहे जाते हैं। अनेक जन्मों के विकर्म किये हुये हैं इस कारण भोगना होती है। इस लिये कभी भी इस से डरना नहीं है। खुशी से पास करना है। क्योंकि अपना ही किया हुआ हिसाब चुक्तू होता है। प्रायश्चित होता ही है बाप की याद से। बहुत याद करना है। अजन तो मजन पड़ी है। जो जी तो तुम बच्चों को ज्ञान अमृत पीना है। योग में रहना है। इन के (ब्रह्मा के) विकर्म हैं तब तो खांसी आदि होती है और भी कुछ घटना घटे अगर तो कुछ हिसाब होगा। खुशी होती है यहां ही खत्म हो जाए। एक जन्म में पास विद् आनर न होंगे। सोचरा खा कर मानी मिले यह भी बेइज्जती है ना। अनेक प्रकार की दुःख की भोगनाएं होती हैं। यहां अनेक प्रकार के दुःख का पारावार नहीं। वहां सुख का पारावार नहीं रहता। नाम ही है स्वर्ग। क्रिश्चन लोग भी कहते हैं हैवन। देवता ने गाड फादर, इन बातों को तुम जानते हो। निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासी क्या जानें। वे तो कह देते यह गंदा काम। इच्छा समान सुख है। स्थायी सुख तो बिल्कुल नहीं है। बैठे २ आफते आ जाती। हार्ट फेल हो जाती। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे में जाए प्रवेश करती है तो शरीर बाकी मिट्टी हो जाते हैं। जानवरों आदि के शरीर भी काम में आते हैं। मनुष्य का काम में नहीं आता है। पारसी लोग एक खड्डा बनाये वहाँ लाश को छोड़ देते हैं तो गल कोई जानवर आदि के काम आ जाए। चीलें आदि खा जाती हैं। कोई फिर मनुष्य की मिट्टी ले कर चक्र लगाते हैं। वे लोग ऐसे नहीं करते। यह सब है फालतू बढ़ाई। जानते कुछ भी नहीं। तमोप्रधान पतित शरीर बिल्कुल कोई काम का नहीं है। कौड़ियों मिसल है। देवताओं के हीरे मिसल हैं तो उन्हों की देखो कितनी पूजा होती है। यह राज़ अभी तुम बच्चों को मिला है। जानते हो वे हद का बाप मोस्ट बिलवेड है। जिस को पूरा आत्मा कल्प याद किया है। जो २ ब्राह्मण बनते हैं वे ही [illegible] वर्सा लेते हैं। सच्चे ब्राह्मण तो बहुत पवित्र रहने चाहिये। सच्चे गीता पाठी को तो पवित्र रहना ही है। झूठे गीता पाठी तो पवित्र नहीं रहते। रात को छी छी हो कर फिर सुबह में आए गीता सुनाते। अरे गीता में तो लिखना हुआ है काम महा शत्रु है। फिर खुद गीता सुनाने वाले पवित्र कहाँ रहते। गीता है सर्व शास्त्र शिरोमणी जिस से बाप ने और ही हीरे जैसा बनाया है। बट तुम समझते ही गीता पाठी नहीं समझ सकते। वे तो तोते मुआफिक पढ़ते रहते हैं। उन्हों मुआफिक हे हे करते रहते। अर्थ कोई भी नहीं। गहिना सारी है ही एक की। दूसरी कोई चीज की गहिना है नहीं। [illegible] की भी नहीं। तुम इन के आगे लिखना भी

माथा कूटो - इन के आगे बल चढ़ो तो भी वर्सा नहीं मिलेगा। काशी में काशी कलवट खाते हैं ना - अभी वह खड्डा बन्द कर दिया है - नहीं तो बहुत काशी कलवट खाते थे। खड्डा में जाए कूदते थे - समझते थे यह सब से अच्छा है, कोई देवी पर बल चढ़ते थे, कोई शिव पर। देवताओं पर बल चढ़ने का कायदा नहीं है। माता पर और शिव बाबा पर बल चढ़ा जाता है। ब्रह्मा पर बल चढ़ना कब सुना नहीं होगा। काली पर बल चढ़ते हैं - काली को कितना काला बनाया है। अभी है वास्तव में आयरन एजड लोहयुग माँ, जगताम्बा एक को ही कहा जाता। ... को अम्बा नहीं कहेंगे - अभी यह कोई भी नहीं जानते जगताम्बा सरस्वती ब्रह्मा की बेटी है - ब्रह्मा जरूर प्रजा पिता ही होगा - सूक्ष्म वतन में तो नहीं होगा समझते भी हैं सरस्वती ब्रह्मा की बेटी है। ब्रह्मा की स्त्री तो बताते नहीं हैं - तो ब्रह्मा की बेटी कहाँ से आई जब कि स्त्री नहीं है। बाप बैठ समझाते हैं मैं ने इस ब्रह्मा द्वारा बैठ सरस्वती को अडाप्ट किया है। बेटी भी समझते हैं फिर शास्त्रों में लिख दिया है ब्रह्मा सरस्वती पर फिदा हुआ - उलटी बात हो गई ना - वह तो ब्रह्मा की बच्ची है - बाप एडाप्ट करते हैं। ब्रह्मा को भी अडाप्ट किया है - ये बहुत गुह्य बातें हैं - जो कोई की बुद्धि में नहीं हैं। बाप तुम को अपना भी अन्त बैठ देते हैं - सो तो जरूर सन्मुख ही देंगे। प्रेरणा से थोड़े देंगे। प्रेरणा से कुछ होता है क्या। सिखलाना प्रेरणा से होता है क्या। भगवानोवाच्य हे बच्चे! सो तो जरूर साकार में आवे तब कहेंगा ना। निराकार बाप इन द्वारा बैठ पढ़ाते हैं। ब्रह्मा नहीं पढ़ाते। ब्रह्मा को ज्ञान का सागर नहीं कहा जाता। आत्मा समझती है यह कोई लौकिक बाप नहीं पढ़ाते। परलौकिक बाप बैठ पढ़ाते हैं - जिस से हम परलोक का वर्सा ले रहे हैं। वैकुन्ठ को परलोक नहीं कहा जाता है। वे अमर लोक और यह है मृत्यु लोक। परलोक अर्थात् जहाँ हम आत्माएं रहती हैं - यह परलोक नहीं है। हम आत्माएं आती हैं इस लोक में। परलोक है हम आत्माओं का लोक। तुम ने राज्य इस भारत में किया है - परलोक पर नहीं। परलोक का राजा नहीं कहेंगे। कहते हैं कि लोक परलोक सुहेला हो - यह है स्थूल लोक - तो यह और फिर परलोक सुहेला बन जाते हैं। मूल वतन सूक्ष्म वतन और यह स्थूल लोक। लोक अर्थात् जिस में लोग रहते हैं। बच्चे जानते हैं वह ही भारत वैकुन्ठ था - फिर बनेगा। यह है मृत्यु लोक। लोक में मनुष्य रहते हैं। कहते हैं वैकुन्ठ परलोक में जावे। दिल वाला मन्दिर में भी नीचे तपस्या में बैठे हैं और ऊपर में वैकुन्ठ के चित्र बनाये हुये हैं। नीचे तपस्या कर रहे हैं वैकुन्ठ जाने लिये। समझते हैं फलाना वैकुन्ठ पधारा। परन्तु वैकुन्ठ तो यहाँ ही होना है ऊपर में नहीं। आज जो भी पतित लोक है वह फिर पावन लोक हो जावेगा। पावन लोक था - अभी पास्ट हो गया है - इस लिये कहा जाता है परलोक - परे हो गया ना। भारत जो स्वर्ग था अब नरक है - तो स्वर्ग अभी परे हो गया ना। फिर ड्रामा अनुसार हम वाम मार्ग में जाते हैं - तो स्वर्ग परे होता जाता है - इस लिये परलोक कहते हैं। अभी तुम कहते हो हम यहाँ आकर नई दुनियाँ में फिर से अपना राज्य भाग्य करेंगे - हर एक अपने लिये पुरुषार्थ करते हैं - जो करेंगे सो पाएंगे - सब तो नहीं करेंगे। जो पढ़ेगा - लिखेगा होगा नवाब वैकुन्ठ का अर्थात् मालिक बनेंगे। तुम इस सृष्टि को सोने का बनाते हो। कहते हैं ना द्वारका सोने थी फिर समुद्र नीचे चली गई - कोई बैठी तो नहीं है जो निकलेगी। भारत स्वर्ग था देवतायें राज्य करते थे - अभी तो कुछ भी नहीं है - फिर सब कुछ सोने के महल आदि बनाने पड़ेंगे ऐसे नहीं कि ठका करने से निकल आवेंगे - सब कुछ बनाने पड़ेंगे - यह नशा होना चाहिये हम प्रिन्स प्रिन्सिज बन रहे हैं। यह प्रिन्स प्रिन्सिज बनने की कालेज है। वह है प्रिन्स प्रिन्सिज के पढ़ने का कालेज - यह है प्रिन्स प्रिन्सिज बनने का कालेज। तुम राजाई लेने लिये पढ़ रहे हो - प्रिन्स प्रिन्सिज बन रहे हो। वे पास्ट जन्म में दान पुन्य करने से राजा के घर जन्म ले प्रिन्स प्रिन्सिज बने हैं। वह प्रिन्स प्रिन्सिज की कालेज कैसे अच्छी होगी। कितने अच्छे कौच आदि होंगे - टीचर के लिये भी अच्छा कौच होगा। सतयुग त्रेता में प्रिन्स प्रिन्सि

वहाँ का कालेज कैसा अच्छा होगा। कालेज में तो जाते होंगे ना। आता तो सीखे जो ना। उन सब का प्रिन्स प्रिन्सिज का कालेज दूसरा। और तुम प्रिन्स प्रिन्सिज बनने वालों का कालेज दूसरा। कैसा सोफा सेट है। उनके पृथ्वी के भी नहीं मिलते। तुम जानते हो वहाँ प्रिन्स प्रिन्सिज़ कैसे जाते हैं कालेज में। वहाँ पैदल भी नहीं करना पड़ता। गर्भ से निकले और यह ऐरोप्लेन उड़ा। वहाँ के कैसे अच्छे २ कालेजज हैं जो। कैसे सुन्दर-२ गाड़ीचे फूल आदि होंगे। कितने बड़े २ फूल होते हैं - वहाँ की हर चीज बड़ी - (मिस्टेक्ट नम्बर वन होती है - 5 तत्व ही सतोप्रधान हो जाते हैं - तुम्हारी सेवा कौन करेंगे यह 5 तत्व। अच्छे से अच्छी चीज तुम्हारे लिये पैदा होगी। - जब कोई बहुत अच्छा फल आदि कहीं निकलता है तो वह राजा रानी को सौगात भेजते हैं - यहाँ तो तुम्हारा बाप है - शिव बाबा। है - सब से ऊंच ते ऊंच। उन को तुम क्या खिलावेंगी। शिव बाबा ने तो इन का सब कुछ खाना बन्द कर दिया है। कहते हैं कुछ न खाओ। बाबा इस में भी खुश होते हैं। जिल में तो जाना है ना - फिर वहाँ जा कर खा लेंगे। यहाँ कोई चीज की इच्छा नहीं रखनी है - यह पहनूं - यह खाऊं - यह करूं यह न रहना चाहिये। यहाँ यह सब किया तो फिर वहाँ कम हो जावे जा। अभी तो सारी दुनियां का त्याग करना है - देह सहित सब कुछ त्याग - वैराग्य अर्थात त्याग बात एक ही है। वैराग्य आया और त्याग किया जाता है। बाबा कहते हैं तुम बच्चों लिये तिरी पर बहिश्त ले आया हूँ। जानते ही बाबा हमारा है तो उन को याद करना पड़े। जैसे कन्या की सगाई हुई और लगन जुटी। कब नहीं कहेंगे हम पति को याद नहीं करती हैं - बिल्कुल नहीं। क्योंकि वह लाईफ का मेल हो जाता है - वैसे ही बाप और बच्चों की लाईफ का मेल होता है, परन्तु माया भुलावा देती है। बाप कहते हैं मुझे याद करो और वर्से को याद करो - - - तो फिर जीवन मुक्ति आ जाती है। फिर से भी भूल क्यों जाता है - क्यों कायर बन जाते हो। इस में है बुद्धि का काम - ज्ञान से कुछ भी नहीं बोलना है - अन्दर निश्चय करना है - हम पवित्र थे पवित्र दुनियों का वर्सा लेंगे - इस में सरमाने की बात है - बोलने की नहीं। हम बाबा के बने हैं जो बाबा पतितों को पावन बनाने वाला है। कहते हैं बच्चे मुझे याद करते रहो - इस का अर्थ ही है जन्म जन्मान्तर की उन्हों ने फिर K भगवानो वाच लिख दिया है - पतित-पावन तो एक ही है ना। सबका सद्गति दाता एक - तो एक को ही याद करना है। कहते हैं तुम मुझ एक बाप को भूलने कारण फिर पतित बनेंगे, को याद करते रहते हो - अन्त फिर मुझे याद करो तो तुम विकमी जीत राजा बनेंगे। कुल विकमाजीत राजा और विकमी राजा का फर्क भी बताया था। पूज्य से पुजारी का जाते नीचे आना ही है। वैश वंश फिर शूद्र वंश। वंश गोत्र नाम मार्ग में जाना। हिरदी जात्रा की तो सारी बुद्धि में है - इस पर कहानियाँ भी बहुत हैं। वहाँ मोह की भी बात नहीं रहती। बच्चे आदि बड़े मौज में रहते हैं। आटोमेटिकली अच्छी रीति चलते रहते हैं। दास दासियां तो उनके रहते ही हैं। तो अपनी तकदीर को देखो हम किस कालेज में बैठे हैं - जहाँ से हम भविष्य प्रिन्स प्रिन्सिज़ बनते हैं। फर्क तो जानते हो ना। यह वर्तमान प्रिन्स प्रिन्सिज़ की सतयुगी प्रिन्स प्रिन्सिज़ - वे महाराजा महारानी - यह राजा रानी। लक्ष्मी के नाम भी हैं। ना. वा R.K. फिर उन लक्ष्मी N. आदि - K आदि की पूजा क्यों करते - नाम तो एक ही है ना - हाँ वे स्वर्ग के मालिक थे। अभी यह कहते हैं हम नरक के मालिक हैं। यह तो कोई को पता नहीं है ना कि कौन 84 जन्म लेते हैं - अभी तुम जानते हो - शास्त्रों में यह कालेज थोड़े ही है - नहीं तो क्यों दिखाया है कि B. द्वारा Pita Shiv Baba Brahma Prajapita Brahma Saraswati सब वेदों शास्त्रों का सार सुनाते हैं - क्योंकि इन में कोई सार नहीं है। अभी तुम समझ गये हो इन भक्ति-तप दान पुण्य में कोई सार नहीं है। सारा अनुभव दुनिया को कराना होगा ही है। शास्त्र भी तभी गाये